प्र.५ ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए । (२०)

(क) भरा था मन में नव उत्साह सीख लूँ ललित कला का ज्ञान,
इधर रह गंधर्वों के देश, पिता की हूँ प्यारी संतान ।
घूमने मेरा अभ्यास बढ़ा था मुक्त-व्योम-तल-नित्य
कूतूहल खोज रहा था, व्यस्त हृदय-सत्ता का सुंदर सत्य ।

अथवा

(क) आकाश-जाल सब ओर तना,
रवि तन्तुवाय है आज बना;
करता है पद-प्रहार वही,
मक्खी-सी भिन्ना रही मही !
लपट से झट रूख जले-जले,
नद-नदी घट सूख चले, चले ।
विफल वे मृग-मीन मरे, मरे,
विफल ये दृग दीन भरे, भरे !

(ख) यों तों वो
कल्लू था -
कल्लू रिक्शावाला
यानी कलीमुद्दीन...
मगर अब वो
'परेम परकास'
कहलाना पसंद करेगा...
कलीमुद्दीन तो
भूख की भट्ठी में
खाक हो गया था

अथवा

(ख) ध्यान से देखता हूँ - वह कोई परिचित,
जिसे खूब देखा था, निरखा था कई बार
पर पाया नहीं था ।
अरे हाँ, वह तो....
विचार उठते ही दब गए
सोचने का साहस सब चला गया है ।
वह मुख-अरे, वह मुख, वे गाँधीजी !!
इस तरह पंगु !!
आश्चर्य !!
नहीं, नहीं, वे जाँच-पड़ताल
सुरागरसी-सी कुछ
करते हैं चुपचाप ।
रूप बदलकर ।

* * *